रेडक्रास का इतिहास

रेडक्रास के संस्थापक – सर जीन हेनरी ड्यूनेंट।

सर जीन हेनरी ड्यूनेंट का जन्म – 8 मई, 1828, जन्म स्थान – जेनेवा (स्विट्जरलैण्ड) में।

पिता – जीन जैक्स ड्यूनेंट, जेनेवा की अदालत में मजिस्ट्रेट।

माता का नाम – श्रीमती एनटोइनी ड्यूनेंट, घरेलू सामाजिक।

पारिवारिक पृष्ठभूमि – एक समृद्ध, सभ्य, सांस्कारिक एवं दयावान परिवार में जन्मे।

एक समर्पित मानवतावादी का जीवन–चित्र – हेनरी ड्यूनेंट

हेनरी ड्यूनेंट का जन्म 8 मई, 1828 को जेनेवा, स्विटजरलैण्ड में हुआ, वे एक परोपकारी परिवार से थे और जिनेवा के नागरिकतावादी, धार्मिक माहौल में पले–बढ़े, छोटी उम्र में ही उच्च नैतिक मूल्यों का विकास हुआ और गम्भीरतापूर्वक खुद को धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों से जोड़ा।

हेनरी ड्यूनेंट एक वित्तीय और औद्योगिक कम्पनी के प्रभारी थे, जिससे जुड़ी अनुमतियां प्राप्त करने के लिए ड्यूनेंट फ्रांसीसी शासक नेपोलियन तृतीय से मिलने फ्रांस पहुंचे, परन्तु सम्राट नेपोलियन इटली में क्षेत्र निर्देशन में लगी अपने सेना को मार्गदर्शन देने में जुटे थे। उन्होंने हजारों जख्मी सिपाहियों के भीषण दुख–दर्द को काफी नजदीक से देखा और चिकित्सा सेवाओं के अभाव में तड़पते देखा। इससे प्रभावित होकर उन्होंने जख्मी सिपाहियों की सुरक्षा के लिये एक क्रान्तिकारी आन्दोलन की शुरूआत की। उन्होंने अपनी यादगारों और युद्धभूमि से जुड़े अपने गहन अनुभवों को पुस्तक "ए मेमोरी ऑफ सॉलफेरिनों" में संजोया। यह पुस्तक युद्ध के समय मानवीय नियमों को लागू करने की आवश्यकता के प्रति अंतरराष्ट्रीय समुदाय को सहमत करने में निर्णायक साबित हुई। 1863 में, जिनेवा की कुछ प्रतिष्ठित शख्सियतों के समर्थन के साथ उन्होंने एक पहले राजनायिक सम्मेलन का आयोजन किया, जो 1864 के पहले जिनेवा सम्मेलन का आधार बना। यहीं से अंतरराष्ट्रीय रेडक्रास और रेडक्रीसेन्ट आन्दोलन का सूत्रपात हुआ, जिसमें आज 192 देशों की राष्ट्रीय समितियां समाहित हैं। साथ ही इससे इंटरनेशनल कमेटी ऑफ रेडक्रास (आई0सी0आर0सी0) इंटर नेशनल फेडरेशन ऑफ रेडक्रास और रेडक्रीसेन्ट सोसाइटीज भी जुड़ी हुई है।

हेनेरी ड्यूनेंट की मृत्यु हाईडेन, स्विटजरलैण्ड में 30 अक्टूबर, 1910 को हुई। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनकी वसीयत खोली गयी तो दुनिया यह पढ़कर हैरान हो गयी कि नोबेल पुरस्कार की राशि तथा लोगों से आयी दान की राशि में उन्होंने कुछ भी प्रयोग नहीं किया। उन्होंने अपनी इच्छा प्रकट की कि सारी जमा पूंजी भलाई का कार्य करने वाली संस्थाओं में बांट दी जाए। जिसमें उन्होंने लिखा ''मुझे न राज्य की कामना है और ना ही स्वर्ग की, न पुनर्जन्म की, मेरी कामना दुखी मानवता की पीड़ा को समाप्त करना है''। इस तरह वे रेडक्रास सोसाइटी के रूप में एक बहुत बड़ी पूंजी संसार को प्रदान करके संसार में अमर हो गये।

हेनरी ड्यूनेंट का जन्मदिन, 08 मई को ''विश्व रेडक्रास और रेडक्रीसेन्ट दिवस'' के रूप में मनाया जाता है।

भारत एवं उत्तराखण्ड में रेडक्रास की स्थापना

भारत में रेडक्रास की स्थापना के लिए लीग ऑफ रेडक्रास ने तत्कालीन भारत सरकार के समक्ष प्रस्ताव रखा। 3 मार्च 1920 को यह प्रस्ताव भारतीय संसद में रखा गया, 17 मार्च को प्रस्ताव पास हुआ, और 20 मार्च को वायसराय की स्वीकृति के पश्चात् सम्पूर्ण भारत वर्ष में लागु हुआ। इस बिल को एक्ट 15, 1920 कहा जाता है। भारतीय रेडक्रास सोसाइटी के उद्देश्य और कार्यों का उल्लेख एक्ट में किया गया है जिसके अनुसार रेडक्रास सम्पूर्ण भारत वर्श में कार्य करती है। राष्ट्रीय स्तर पर मा0 राष्ट्रपति, भारतीय रेडक्रास समिति के अध्यक्ष होते हैं, तथा राज्य स्तर पर मा0 राज्यपाल उत्तराखण्ड रेडक्रास समिति के पदेन अध्यक्ष होते हैं। रेडक्रास के दैनिक कार्यों एवं रेडक्रास गतिविधियों के संचालन हेतु मैनेजिंग कमेटी होती है।

भारतीय रेडक्रास समिति राज्य शाखा उत्तराखण्ड का गठन 13 मई, 2002 को हुआ। रेडक्रास उत्तराखण्ड कार्यालय, डाण्डा लखोंण्ड सहस्त्रधारा रोड देहरादून से स्थित है। सभी जनपदों में रेडक्रास समितियाँ कार्यरत हैं, जनपद स्तर पर जिलाधिकारी जनपदीय समिति के पदेन अध्यक्ष होते हैं।

जूनियर/यूथ रेडक्रास – संक्षिप्त इतिहास

जूनियर रेड क्रास की स्थापना, लीग आफ रेड क्रास की स्थापना के साथ–साथ हुई, परन्तु बच्चों की ओर से रेडक्रास के लिए काम बहुत पहले से शुरू हो गया था। स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों ने अपने अध्यापकों की प्ररेणा के साथ रेड क्रास के कामों में हाथ बटाना आरम्भ कर दिया था। विद्यालयों में जूनियर रेडक्रास तथा उच्च शिक्षण संस्थानों में यूथ रेडक्रास कार्य करती है।

1919 में लीग आफ रेडक्रास की स्थापना हुई। 1922 में लीग काउंसिल के मीटिंग में विचार विमर्श करके यह निर्णय किया गया की हर एक नेशनल रेडक्रास सोसायटी स्कूल तथा कालेजों के विद्यार्थियों के लिए जूनियर तथा यूथ रेडक्रास की स्थापना करे। जूनियर रेडक्रास की स्थापना इस उद्देश्य के साथ की गयी है कि अपने देश के बच्चों के मन में शान्ति व सेवा भाव के आदर्श भरे जाएं तथा वह अपने एवं साथी बच्चों के स्वास्थ्य का ध्यान रखें, उनके मन में नागरिकता एवं मानवता के प्रति ज्ञान पैदा हो तथा उनके मन में सारे संसार के बच्चों के प्रति मित्रता की भावना पैदा हो सके। 1925 में भारतीय रेडक्रास में जूनियर रेडक्रास विंग अलग प्रकार से बनाई गई, तथा सभी राज्यों से अपील की गयी कि राज्य शाखाऐ जूनियर रेडक्रास शाखा स्थापित करें। पंजाब देश का पहला राज्य था जिसने 22 सितम्बर, 1926 को जूनियर रेडक्रास शाखा शुरू की।

जूनियर तथा यूथ रेडक्रास का आदर्श वाक्य –स्वास्थ्य, सेवा तथा मित्रता है। सभी सदस्य सेवा का कार्य इस प्रण से करते हैं– ''मैं प्रण करता हूँ कि मैं अपनी सेहत तथा अपने साथी की सेहत का ध्यान रखूंगा, मैं बीमारों तथा दीन–दुखियों की सहायता करुंगा तथा संसार भर में हर जगह रह रहे बच्चों को अपना मित्र समझूंगा''।

भारत में इण्डियन रेडक्रास सोसाईटी की स्थापना भारतीय संसद में इण्डियन रेडक्रास सोसाइटी अधिनियम एक्स.वी.15, 1920 के अन्तर्गत हुई। इसके पहली अनुसूची के अनुभाग 7 में धारा न0 4 में जूनियर रेडक्रास की स्थापना के बारे में लिखा गया है। अत: इण्डियन पार्लियामेन्ट एक्ट के अनुसार यह आवश्यक है कि हर स्कूल, कालेज में जूनियर/यूथ रेडक्रास की स्थापना हो।

रेडक्रास को नोबेल शान्ति पुरस्कार

रेडक्रास समिति के जनक हेनरी ड्यूनेंट को वर्ष 1901 में पहला नोबेल शान्ति पुरस्कार दिया गया, तत्पश्चात् प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान किये गये कार्यों के लिए सन् 1917 एवं 1944 में, और सन् 1963 में रेडक्रास द्वारा विगत 100 वर्षों में किये गये सराहनीय कार्यों के लिए चौथी बार नोबेल शान्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ।

अंतराष्ट्रीय रेडक्रास/रेडक्रिसेंट आन्दोलन का मिशन वक्तव्य

मानवीय दुखों को, जहां कहीं भी वह हो, रोकना और दूर करना, जीवन और स्वास्थ्य की रक्षा करना और मानव मात्र के सम्मान को सुनिश्चित करना, विशेषकर सशस्त्र संघर्ष और अन्य आपात स्थितियों में, बिमारियों की रोकथाम और स्वास्थ्य तथा सामाजिक कल्याण के हित में काम करना, स्वयंसेवा को बढ़ावा देना तथा सहायता के लिए आन्दोलन के सदस्यों की सतत् तैयारी और जिन्हें रक्षा और मदद की जरूरत है उन सभी के साथ एकजुटता की सार्वभौमिक भावना का होना।

रेडक्रास के सात मूलभूत सिद्धान्त

मानवता– मानवता की सेवा रेडक्रास का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। रेडक्रास का उद्देश्य जीवन एवं स्वास्थ्य की रक्षा करना है जैसे – युद्ध प्राकृतिक आपदा, पानी/भोजन की कमी अथवा अन्य दूसरी स्थिति में।

निष्पक्षता– यह राष्ट्रीयता, जाति, धार्मिक विश्वासों, वर्ग श्रेणी या राजनैतिक विचारों के आधार पर कोई विभेद नहीं करता है।

तटस्थता– निष्पक्षता की भांति तटस्थता रेडक्रास कार्य के लिए एक विशुद्ध शर्त है।

स्वतंत्रता–रेडक्रास स्वतंत्र रूप से कार्य करती है। संस्था के रूप में रेडक्रास अपने देश के कानून के अनुसार कार्य करने के निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र है।

स्वैच्छिक सेवा–रेडक्रास स्वैच्छिक रूप से राहत प्रदान करने का कार्य करती है। जिसमें किसी भी प्रकार के लाभ/प्राप्ति की इच्छा नहीं है।

एकता– किसी भी देश में केवल एक ही रेडक्रास संस्था हो सकती है। यह सभी के लिए खुली होनी चाहिए।

सार्वभौमिकता–अन्तर्राष्ट्रीय रेडक्रास तथा रेड क्रीसेन्ट के अन्तर्गत समस्त रेडक्रास समितियों को समान स्थिति, समान हिस्सा, समान उत्तरदायित्व और कार्य एक–दूसरे देश को सहायता प्रदान करने के लिए विश्व स्तर पर निहित है।

रेडक्रास चिन्ह् का महत्त्व एवं इतिहास

रेडक्रास चिन्ह् निष्पक्ष और गैर पक्षपातपूर्ण सेवा का प्रतीक रहा है। यह चिन्ह पीड़ितों के लिए एक उम्मीद की किरण होने के साथ–साथ उन लोगों के लिए सुरक्षा कवच की तरह काम करता है सो विषम परिस्थितियों में भी पीड़ितों की सहायता के लिए जाते हैं। और यही कारण है की इस चिन्ह का इस्तेमाल केवल उन्हीं लोगों द्वारा होना चाहिए जो आधिकारिक रूप से इसके लिए चुने गये हों। महान विचारधारा के जनक सर जीन हेनरी ड्यूनेंट स्वीटजरलेंण्ड के निवासी थे, इसलिय उन्हें सम्मान प्रदान करने के लिए स्वीटजरलेंण्ड के झण्डे के ठीक विपरीत सफेद पृष्ठभूमि में लाल रेडक्रास के चिन्ह् से ''रेडक्रास चिन्ह्'' बनाया गया। इस चिन्ह् का इस्तेमाल अंतरराष्ट्रीय रेड क्रॉस और रेड क्रिसेंट मूवमेंट के लिए कार्य कर रहे स्वयं सेवकों एवं सेना के चिकित्सक जवानों, के द्वारा ही किया जा सकता है।

मानवता की सेवा हेतु समर्पित रेडक्रास के कार्य –

भारतीय रेडक्रास समिति का मिशन, पूर्ण निष्पक्षता के साथ, राष्ट्रीयता, नस्ल, लिंग, धार्मिक मतों, भाषा, वर्ग या राजनीतिक मतों का भेदभाव किए बिना पीड़ा का निवारण करना है। मानवता की सेवा हेतु समर्पित रेडक्रास समिति के निम्नलिखित कार्य हैं :–

1. सशस्त्र संघर्ष और शांति में कार्य करना, अन्तर्राष्ट्रीय मानवतावादी विधि के कार्य क्षेत्र के भीतर जेनेवा अभिसमयों में सम्मिलित सभी क्षेत्रों तथा युद्ध पीड़ितों, सैनिक तथा असैनिक, दोनों की ओर से भी क्षेत्रों में कार्य करने के लिये तैयार रहना।
2. मानवता की सेवा हेतु समर्पित एवं सात मूलभूत सिद्धान्तों मानवता, निष्पक्षता, तटस्थता, स्वतंत्रता, स्वैच्छिक सेवा, एकता एवं सार्वभौमिकता के आधार पर कार्य करना।
3. समुदाय के स्वास्थ्य में सुधार लाने, रोग निवारण तथा मातृ और बाल परिचर्चा में योगदान करना।
4. जन समुदाय को आपदाओं का सामना करने एवं उनसे कैसे निपटें इसके लिए जागरूक करते हुए उन्हें प्रशिक्षण प्रदान करना।
5. आपदाओं से पीड़ितों लोगों के लिये आपातकालीन राहत कैम्प चलाना और उनकी पीड़ा को कम करना।
6. रेडक्रास के कार्यों में बालकों और युवाओं (जूनियर एवं यूथ रेडक्रास स्वयं सेवकों) की भागीदारी को बढ़ावा देना।
7. अभियान और अन्तर्राष्ट्रीय मानवतावादी विधि के मूल सिद्धान्तों को बढ़ावा देना जिससे जन समूह विशेषतः बालकों और युवाओं के मन में मानवीय सेवा करने की प्रेरणा जागृत करना।
8. मानवतावादी उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने के लिये स्वयं सेवकों को प्रशिक्षित कर तैयार करना।
9. स्थानीय आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के आधार पर समुदाय की सेवा हेतु कार्यवाही करते किसी आपदा या घटना के घटित होने पर स्वयं सेवकों के माध्यम से सेवा कार्य करना है।
10. रेडक्रास प्रतीक चिन्ह् के संरक्षात्मक मूल्य को बनाये रखने के लिये इसका सही उपयोग सुनिश्चित करना।